मातेश्वरी – विश्व में एक अनोखा व्यक्तित्व

- ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मम्मा का जो प्यार था, मम्मा का जो दुलार था, जो व्यक्तित्व था वह इतना प्रभावशाली था कि बाबा द्वारा दी जा रही शिक्षाओं का मूर्तरूप था। योगी के लिए गाया हुआ है कि उसका व्यक्तित्व परान्त सुखाय होता है, उसके मन में सबके प्रति सद्भावना रहती है, सबके प्रति प्रेम रहता है। वह किसी का भी बुरा नहीं सोचता, वह सबका भला सोचता है। बाबा के जीवन में भी हमने इन बातों को प्रैक्टिकल देखा, सिर्फ कहने मात्र नहीं। जो निन्दा करते थे, बाबा ने उनको भी मित्र की तरह ही चलाया। बाबा कहते थे, "ये भी मेरे बच्चे हैं ना! इनको ज्ञान नहीं है, इनका कसूर नहीं है। ड्रामा अनुसार इनका यही पार्ट है क्योंकि इन्होंने अभी समझा नहीं है ना! जब समझ जायेंगे तो ऐसा नहीं करेंगे। इसलिए इनकी बात को बुरा मानने की ज़रूरत नहीं है।" ऐसे ही हमने मम्मा में भी यही विशेषता देखी। उनके जीवन में एक चुम्बकीय शक्ति थी, वह इस कारण से थी कि उन्होंने सबको शिशुवत् समझा। उनकी यह प्रत्यक्ष अनुभूति थी। व्यवहार उनका ऐसा था जैसे वो सचमुच में साक्षात् जगदम्बा थीं चाहे उनकी आयु कुछ भी हो। आप सोचिये, यह देह-अभिमान ख़त्म हो गया ना! जब आयु का भान नहीं, पुरुष है, स्त्री है इसका भान नहीं, शत्रु है या मित्र है इसका भान नहीं। किसी भी चीज़ का देह-अभिमान नहीं तो वह योगी होगा ना! बिना योग के देह-अभिमान कैसे चला गया? योग की शक्ति सर्वश्रेष्ठ है। योगबल से ही विजय प्राप्त होती है। विजयमाला का मणका बनता है। तो यह हमने मम्मा की ज़िन्दगी में प्रैक्टिकल देखा।

पुरुषार्थ का अर्थ

आज भी बाबा हमसे बार-बार कहते हैं, "बच्चे, आपके योग की अवस्था ऐसी हो जिससे मनसा सेवा कर सको। अन्त में ऐसी ही सेवा होगी, लोग बहुत घबराये हुए, दुःखी, अशान्त होंगे। आप दृष्टि देकर उनको शान्ति की शक्ति देना। मम्मा के जीवन में तो इन सब प्यारी अवस्थाओं को हमने देखा है। बाबा ने मम्मा को कोई बात बार-बार नहीं कही। यही मम्मा की विशेषता थी कि बाबा ने जब कोई एक शिक्षा दी, दुबारा कहने की ज़रूरत बाबा को नहीं रही। जी हाँ, कहके मम्मा ने उसको अपने जीवन में लाया। इसको कहते हैं, पुरुषार्थ। मम्मा ख़ुद मुरली सुनाती थी। अपनी वाणी चलाती थीं तो कहती थीं कि जब आप कहते हो कि मैं पुरुषार्थी हूँ, तो आप यह पुरुषार्थी शब्द किस भाव से कहते हो, किस प्रसंग में कहते हो, "भाई, मैं अभी पुरुषार्थी हूँ ना!" गोया आप 'पुरुषार्थी' शब्द का भाव यह लेते हो कि पुरुषार्थी माना जिसमें कमियाँ हों, कमज़ोरियाँ हों, ग़लती व भूल करता रहता हो। यह पुरुषार्थी का मतलब नहीं है। पुरुषार्थी सच्चे अर्थ में उसको कहा जाता है जिसको एक बार कोई बात समझाने के बाद फिर दुबारा समझाने की ज़रूरत न रहे। यह है सच्चा पुरुषार्थ, ऐसा पुरुषार्थ करना है। यह हमने प्रैक्टिकल उनके जीवन में देखा। बाबा ने जो शिक्षा दी, उसे उन्होंने उसी तरह से पालन किया और आचरण में लाया।

दृढ़ निश्चय कैसे ?

मम्मा का निश्चय बहुत दृढ़ और अटूट था। निश्चय के भी कई प्रकार होते हैं। हर एक का निश्चय एक जैसा नहीं होता। कई मानते हैं कि शिव बाबा आ गये हैं, दुनिया बहुत ख़राब हो चुकी है...यह वह... सारी बातों में निश्चय होगा लेकिन इस दुनिया का विनाश हो जायेगा, यह कैसे होगा, उन्हें समझ में नहीं आता। कल्प की आयु पाँच हज़ार वर्ष है, तो कई लोग कह देते हैं कि इन बातों में अभी तक हमारा निश्चय नहीं है। वे क्लास में रोज़ आते हैं, मुरली रोज़ सुनते हैं, हम बाबा के बच्चे हैं, यह भी कहते हैं लेकिन शत-प्रतिशत निश्चय हो जिसको सम्पूर्ण निश्चय कहा जाता है – उनमें वह नहीं होता है। एक है सम्पूर्ण निश्चय, दूसरा है दृढ़ निश्चय। मम्मा कभी अपने उस निश्चय से हिली नहीं।

अटल निश्चय कैसे ?

एक बार मम्मा को कोर्ट जाना पड़ा। एक छोटी-सी कन्या, इतने बड़े-बड़े लोग वहाँ बैठे थे। उनके सामने मम्मा से कोर्ट में यह प्रश्न पूछा गया कि दादा लेखराज सबको गोद में क्यों लेते हैं? तो मम्मा ने कहा, "वो हमारे पितामह हैं। पिता अगर बच्चे को गोद में लेता है तो क्या ग़लत करता है? कमाल है आप यह प्रश्न करते हैं! क्या यह प्रश्न शोभता है? आप भी बाप हैं आपने कभी अपने बच्चों को गोद में नहीं लिया है?" ऐसे मम्मा ने कड़ाकेदार जवाब दिया। कोई संकोच नहीं किया, कोई लज्जा नहीं की। क्यों? क्योंकि उनको मालूम था कि बाबा का मन कितना निर्मल है, कितना शुद्ध है और उनकी गोद तो स्वर्ग से भी बढ़कर है। जो उनकी गोद में जाता है वह ईश्वरीय वर्से का हक़दार हो जाता है। तो यह निश्चय उनका अटल रहा। अपने निश्चय से वे कभी टली नहीं। कई बार कई लोग जान बचाने के लिए कुछ इधर-उधर की बात कह देते हैं। वे कहते हैं कि बाद की बात बाद में देखी जायेगी, अभी फिलहाल हम मुश्किल में पड़े हुए हैं, तो अभी ऐसा कह दो, वैसा कह दो। लेकिन मम्मा में ऐसा नहीं था। तो दृढ़ निश्चय, सम्पूर्ण निश्चय, अटल निश्चय और शक्ति से भरपूर निश्चय मम्मा का था। हरेक अपने-अपने निश्चय को देखें, क्या उसमें यह सारी बातें हैं? कभी मम्मा के जीवन में कोई ऐसी बात नहीं आई जो उनका निश्चय थोड़ा डांवाडोल हुआ हो।

समस्त मानवजाति की माँ

कई लोगों के मन में यह प्रश्न उठता होगा कि मम्मा को ही बाबा ने क्यों आगे रखा, क्यों चुना? एक बात तो निश्चय की थी और दूसरी थी पवित्रता की। पवित्रता नाम सिर्फ ब्रह्मचर्य का नहीं है, पवित्रता अर्थात् मन, वचन, कर्म की पवित्रता। विकारों को परास्त करना, उन पर विजय प्राप्त करना – यह पवित्रता है। जो निषेधात्मक या बुरे संकल्प हैं वह भी ना आयें। अरे! मम्मा का मन इतना निर्मल था, इतना शुद्ध था कि जो कोई उनके सामने गया वह नतमस्तक हो गया! माँ, माँ शब्द उनके मुख से निकला, चाहे वह 70 साल का हो, चाहे 80 साल का हो, चाहे वह 20 साल का युवा ही हो। उनको देखते ही सबके मुख से निकलता था यह 'माँ' है, 'यह मेरी 'माँ' है।

मम्मा से मिलने कई शहरों से देवियों के कई पुजारी आते थे। समाचार पत्रों के बड़े पत्रकार आते थे, प्रसिद्ध लेखक आते थे जिनकी पुस्तकें बहुत चलती थीं, प्रचलित थीं। मम्मा से मिलने जब आये, तो वे दंडवत् हो गये। घुटने के बल, टाँगों के बल लेट गये। छोटे बच्चों की तरह माँ, माँ कहते रहे। आँखों से आँसू बहते रहे। क्या बात थी, क्या जादू था! यह हमने अपनी आँखों से देखा कि मम्मा का कितना प्रभाव था! उनके व्यक्तित्व का कितना प्रभाव था! उनके जो मानसिक प्रकम्पन थे उनका लोगों पर कितना प्रभाव पड़ता था! मम्मा को देखकर उनको लगता था कि यह संस्था अच्छी है, इन लोगों की धारणायें अच्छी हैं। जैसे बाबा कहते कि आप बच्चे बाबा के शो-केस के शो-पीस हो, तो मम्मा एक सैम्पल थी।

मियामी-फ्लोरिडा(यू.एस.ए.)। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अर्थ डे पर आयोजित ऑनलाइन कार्यक्रम में 'क्रिएटिंग अ क्लाइमेट फॉर चेंज' विषय पर चर्चा करते हुए ब्र.कु. मेरेडिथ, केट फ्लेमिंग,फाउंडर एंड एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर ऑफ द ब्रिज इनिशिएटिव, एमजे अलगर्रा,फाउंडर एंड एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर क्लीन दिस बीच अप, जेन थायर प्रोग्राम मैनेजर फॉर ए.आई.आर.आई.ई. तथा ब्र.कु. वड्डी।

लीमा-पेरू(साउथ अफ्रीका)। 'द इंटररिलिजियस काउंसिल ऑफ पेरू रिलिजियस फॉर पीस' के आध्यात्मिक और धार्मिक नेता, जिनमें से ब्रह्माकुमारी,पेरू भी एक हिस्सा हैं ने पैंडेमिक कारणों को लेकर, पर्यावरणीय मुद्दों, महिलाओं के खिलाफ आवाज़ को मिटाने के लिए कार्रवाई, प्रवासियों और शरणार्थियों के प्रति प्रतिबद्धता, भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई, स्वतंत्रता और धार्मिक विविधता पर एक सार्वजनिक नीति की दिशा में आगे बढ़ने की आवश्यकता को देखते हुए, इन सब बातों को लेकर गणतंत्र के राष्ट्रपति फ्रांसिस्को सगस्ती से मुलाकात की।

भोपाल-रोहित नगर(म.प्र.)। होली पर्व पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. रीना तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

टंगला-असम। नवनिर्मित राजयोग ट्रेनिंग सेंटर के उद्घाटन व सम्मान समारोह का आयोजन उपक्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. शीला दीदी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के पूर्व रैली निकालते हुए ब्र.कु. भाई-बहनें और कार्यक्रम में उपस्थित रहे दिलीप बोरो,एम.सी.एल.ए. तथा ब्र.कु. मिनाक्षी।